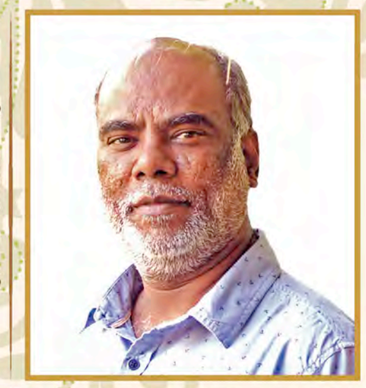

श्री सुधारक किसन ओलवे

**Shri Sudharak Kisan Olwe**




पद्म श्री

**Padma Shri**



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President



# श्री सुधारक किसन ओलवे

श्री सुधारक किसन ओलवे मुम्बई मूल के एक सामाजिक वृत्तचित्र फोटोग्राफर हैं। आपने 27 वर्ष के अपने कैरियर में विभिन्न समाचार पत्रों में काम करने के साथ–साथ हाशिए पर आए उन व्यक्तियों के जीवन को भी अपने कैमरे में कैद किया है जिनकी भारत में कहीं कोई आवाज नहीं है। आपके चित्र तकनीक से परे हैं और आपकी विषय वस्तु के मानवीय पहलू का चित्रण करते हैं।

2. आपका जन्म 19 मार्च,1966 को अकोला, महाराष्ट्र में हुआ। आप हाईस्कूल करने के तुरन्त बाद मुम्बई आ गए। आपने सेंट जेवियर्स इंस्टीट्यूट ऑव कम्यूनिकेशन से उत्तीर्ण होने तथा जे जे स्कूल ऑव आर्ट्स से अध्ययन करने के पश्चात, 1989 में एक प्रेस फोटोग्राफर के रूप में फ्री प्रेस जनरल को ज्वॉइन किया। इसके पश्चात, आपने इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप, आफ्टरनून डिस्पैच और कोरियर, द पायोनियर और डी एन ए में कार्य किया। इस समय आप लोकमत समूह के फोटो एडिटर हैं।

3. आपने सम्पूर्ण भारत की पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक की यात्रा की है जिसमें आपने देश के सामाजिक इतिहास चाहे वे मुम्बई के वेश्यालय हों, नागालैंड में आदिम जातियों के बीच जीविकोपार्जन के लिए कृषि का कार्य हो, भारत में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति हो और उत्तर में कन्या शिशु का महत्व हो, को खोजने के लिए 70 गैर–सरकारी संगठनों को शामिल किया है। आपने कुपोषण, जल और स्वच्छता, महिलाओं के प्रति हिंसा, शिक्षा, और मलेरिया से लेकर महिला सशक्तिकरण, प्रवासी मजदूर, आवासहीन, एचआईवी/एड्स तथा मातृ और नवजात स्वास्थ्य तक विषयों की श्रृंखला पर प्रकाश डाला है। मुम्बई के सफाई कर्मचारियों के बारे में "प्रतिष्ठा और न्याय की खोज में" विषय पर आपके बार–बार याद आने वाले फोटो प्रयास को व्यापक सराहना मिली है। इसने कार्य की अमानवीय दशाओ के मामले को उठाया है और सफाई कर्मियों के सम्मान की मौन लड़ाई में उनकी सहायता की है।

4. आपने सामाजिक परिवर्तन के लिए फोटोग्राफी को एक साधन के रूप में इस्तेमाल करने के उद्देश्य से, 2005 में बेगुन, राजस्थान में फोटोग्राफी प्रोमोशन ट्रस्ट की स्थापना की। शीघ्र ही यह ट्रस्ट असम, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मुम्बई के दूसरे समुदायों में फैल गया। स्थानीय निवासियों को उनके स्वयं के जीवन को चित्रित करने के लिए फोटोग्राफी के बेसिक्स पढ़ाए जाते हैं। इससे वे केवल प्रेरित ही नहीं होते बल्कि जहां उनमें विश्वास होता है वहीं वहां के निवासियों के बीच गहरे सामाजिक संबंध भी मजबूत होते हैं तथा जीविकोपार्जन के समानान्तर साधन भी उपलब्ध होते हैं।

5. आपने छह फोटो पुस्तकें प्रकाशित की हैं–स्पिरिटिड सोलरू विनिंग वुमैन ऑव मुम्बई; विटनेस टू ग्लोरी; महाराष्ट्र का राजभवन; गोपीनाथ मुंडे; नाऊ वाज हिज टाइम; टचिंग लाइव्ज; हाऊ द कंडम मेड इट्स वे इनटू सेमी अर्बन इंडिया; सर्वाइव टू थ्राइव; लाइफ जर्नी ऑव द गर्ल चाइल्ड एण्ड इन सर्च ऑव डिग्निटी एण्ड जास्टिस; द अनटोल्ड स्टोरी ऑव कंजरवेंसी वर्कर्स। आपने सम्पूर्ण देश में और विश्व में स्वीडन, जर्मनी, कम्बोडिया, नीदरलैंड, जापान, बंगलादेश तथा यूएसए में अपने फोटो को प्रदर्शित किया है। अभी हाल ही 2015 में आपने सफाई कर्मियों के अपने फोटो एस्से पर एक टैड टॉक दिया है जो लाखों ऑनलाइन दर्शकों तक पहुँच जाएगा।

6. आपने अपने कार्य के लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। आपको नेशनल जियोग्राफ्रिक्स ऑल रोड्स फोटोग्राफी अवार्ड, 2005 द्वारा सम्मानित किया गया। आपको विश्व प्रेस फोटो सेमिनार 2003 के लिए चुना गया तथा नेशनल फाऊंडेशन फॉर इंडिया 2000 द्वारा मीडिया फैलोशिप से पुरस्कृत किया गया है।

# Shri Sudharak Kisan Olwe

Shri Sudharak Kisan Olwe is a social documentary photographer based in Mumbai. With a career spanning 27 years, he has worked with different newspapers as well as captured the lives of the marginalized, those without a voice in India. His images transcend technique and illuminate the humanity of his subjects. The language of his photography is empathy for creating change.

2. Born on March 19, 1966 in Akola, Maharashtra, Shri Olwe moved to Mumbai shortly after high school. Passing out of St. Xavier's Institute of Communication and having studied at the JJ School of Arts, he joined the Free Press Journal in 1989 as a press photographer. He subsequently worked with the Indian Express, Times of India group, Afternoon Dispatch and Courier, The Pioneer and DNA. He is currently the Photo Editor of the Lokmat Group.

3. Shri Olwe has travelled the length and breadth of India covering over 70 NGOs, many in remote areas, to pursue social stories: be it the brothels of Mumbai, agricultural work for livelihood among tribals in Nagaland, the state of mental health across India and the value of the girl child in the North. He has shed light on a range of topics from malnutrition, water and sanitation, violence against women, education, and malaria to women's empowerment, migrant workers, the homeless, HIV/AIDS and maternal and newborn health. His haunting photo essay "In Search of Dignity and Justice" about the conservancy workers of Mumbai has been widely acclaimed. It has raised the issue of inhuman working conditions and helped the workers in their silent fight for dignity.

4. Shri Olwe founded the Photography Promotion Trust in 2005 in Begun, Rajasthan with a view to use photography as a tool for social change. Soon it spread to other communities in Assam, Uttar Pradesh, Maharashtra and Mumbai. Local residents are taught the photography basics to document their own lives. It not only inspires, instills confidence, and creates deep social ties and bonds among the residents but also provides an alternative means of livelihood.

5. Shri Olwe has published six photo books- Spirited Souls: Winning Women of Mumbai; Witness to Glory: Raj Bhavans of Maharashtra; Gopinath Munde: Now Was His Time; Touching Lives: How the condom made its way into semi urban India; Survive to Thrive: Life Journey of the Girl Child and In Search of Dignity and Justice: The Untold Story of Conservancy Workers. He has exhibited across India and worldwide in Sweden, Germany, Cambodia, the Netherlands, Japan, Bangladesh and USA. Most recently in 2015 he gave a TED Talk on his conservancy workers' photo essay which will reach millions of online viewers.

6. Shri Olwe has earned national and international recognition for his work. He was honored by National Geographic's All Roads Photography Award 2005, selected for the World Press Photo Seminar 2003 and awarded a Media Fellowship by the National Foundation for India 2000.